भारत सरकार

वित्त मंत्रालय

आर्थिक कार्य विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 68

(जिसका उत्तर सोमवार, 22 जुलाई, 2024/31 आषाढ़, 1946 (शक) को दिया जाना है)

भारत का राजकोषीय घाटा

68. श्री भाउसाहेब राजाराम वकचौरे:

क्या **वित्त मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) आज की तिथि के अनुसार विगत तीन वर्षों के दौरान भारत के राजकोषीय घाटे का ब्यौरा क्या है;

(ख) राजकोषीय घाटे में निरंतर वृद्धि के क्या कारण हैं;

(ग) सरकार द्वारा राजकोषीय घाटे को कम करने के लिए अब तक क्या कदम उठाए गए/उठाए जाने हैं;

(घ) क्या सरकार को उक्त अवधि के दौरान राजकोषीय घाटे और मौद्रिक संकट को कम करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) सहित अन्य अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठनों से कोई अनुरोध अथवा निदेश प्राप्त हुए हैं;

(ङ) यदि हां, तो आज की तिथि के अनुसार तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(च) सरकार द्वारा इस पर क्या कार्रवाई की गई है?

उत्तर

वित्त राज्य मंत्री (श्री पंकज चौधरी)

(क) पिछले तीन वर्षों के दौरान केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा निम्नानुसार है:

वर्ष	₹ (करोड़ में)	जीडीपी के प्रतिशत के रूप में
2021-22	15,84,521	6.7
2022-23	17,37,755	6.4
2023-24 (अनंतिम वास्तविक)	16,53,670	5.6

(ख) जैसा कि ऊपर दी गई तालिका से देखा जा सकता है कि राजकोषीय घाटा लगातार नहीं बढ़ रहा है। राजकोषीय घाटा वित्त वर्ष 2022-23 में ₹ 17,37,755 करोड़ के मुकाबले घटकर वित्त वर्ष 2023-24 में ₹16,53,670 करोड़ रह गया है। इसके अलावा, राजकोषीय घाटा और जीडीपी अनुपात में लगातार गिरावट आ रही है।

(ग) सरकार ने वित्त वर्ष 2021-22 के बजट भाषण में वित्तीय समेकन के एक व्यापक ग्लाइड पथ की घोषणा की थी कि वित्त वर्ष 2025-26 तक जीडीपी के 4.5 प्रतिशत से कम राजकोषीय घाटे के स्तर को प्राप्त किया जाए। इसके अलावा, सरकार ने प्राप्तियों में वृद्धि और व्यय को प्राथमिकता देने पर ध्यान केंद्रित किया है।

(घ) भारत एक संप्रभु देश है और अपने नीतिगत निर्णय, स्वतंत्र और इसके स्वयं के होते हैं।

(ङ) और (च) प्रश्न (घ) के उत्तर के आलोक में प्रश्न नहीं उठता।

****